रजिस्ट्रेशन संख्या :– R.N.I. 36355/79
डाक पंजीकरण संख्या :– Kanpur City – 67/2015–2017

चिकित्सा–विज्ञान और प्रौद्योगिक जगत में सर्वाधिक प्रकाशित होने वाला निष्पक्ष समाचार पत्र

पाक्षिक

इलेक्ट्रो होम्यो मेडिकल गज़ट

पत्र व्यवहार हेतु पता :–
सम्पादक
इलेक्ट्रो होम्यो मेडिकल गज़ट
127/204 'एस' जूही, कानपुर–208014

वर्ष –40 ● अंक –7 ● कानपुर 1 से 15 अप्रैल 2018 ● प्रधान सम्पादक – डा0 एम0 एच0 इदरीसी ● वार्षिक मूल्य – ₹ 100

यथास्थिति अभी भी बरकरार

21 जून 2011 ही बनेगा तारणहार

19 मार्च, 2018 को भारत सरकार द्वारा इलेक्ट्रो होम्योपैथी के सन्दर्भ में जारी पत्र के बाद पिछले डेढ़ साल से चली आ रही गहमा–गहमी एक दम से समाप्त हो गई, दावों और वादों का तिलिस्म आखिर टूट ही गया, चौबिसों घण्टे जो नेतागण सोशल–मीडिया पर चमकते रहते थे अनायास उनकी चमक फीकी पड़ गई, माला पहनने का दौर फिलहाल रुक सा गया है। यह सब इतनी जल्दी में हुआ कि लोगों के पास कुछ भी कहने को कोई शब्द नहीं हैं, यह विडम्बना ही है कि कल तक जो लोग जिस संगठन का मज़ाक उड़ाया करते थे वही संगठन आज सबसे मज़बूती के साथ खड़ा हुआ है और इस बात के प्रति आश्वस्त भी है कि इसी संगठन के लिये जारी आदेश 21 जून, 2011 जो कल भी प्रभावी था और आज भी प्रभावी है और आने वाले समय में यही आदेश इलेक्ट्रो होम्योपैथों के लिये वरदान साबित होगा।

हमारे साथियों को यह जानकारी होगी ही कि वर्ष 2016 के अंतिम दिनों में भारत सरकार द्वारा इलेक्ट्रो होम्योपैथी के नियमितिकरण के लिये एक इन्टरडिपार्टमेन्टल कमेटी का गठन किया था, यह इन्टरडिपार्टमेन्टल कमेटी गठित तो वर्ष 2016 में हो गई थी परन्तु 28 फरवरी, 2017 से यह कार्य में आयी, इस कमेटी ने पूरे देश में संचालित होने वाले इलेक्ट्रो होम्योपैथिक के संगठनों से अपेक्षा की थी कि सारे संगठन एक साथ एकत्रित होकर एक ऐसा प्रतिवेदन भारत सरकार को प्रस्तुत करें जिसमें मांगी गई सारी जानकारियां समाहित हों।

जैसा कि इलेक्ट्रो होम्योपैथी में होता आया है कि अपने को सर्वश्रेष्ठ साबित करने की परम्परा यहां पर भी दिखाई पड़ी, फरवरी के अंतिम दिन व मार्च के प्रथम सप्ताह में ही हमारे कुछ शीर्ष साथियों ने पृथक–पृथक रुप में प्रतिवेदन भारत सरकार को इस आशय से भेजे कि वही इस देश में सबसे समर्पित इलेक्ट्रो होम्योपैथी के सच्चे सेवक हैं। इन प्रतिवेदनों का क्या हुआ ? यह सभी लोग जानते हैं, यह वही स्थिति हुई थी कि भोजन के पहले ही निवाले में मक्खी आजाये तो सामने परोसा हुआ भोजन चाहे कितना ही सुस्वाद क्यों न हो वह बेकार हो जाता है, यही स्थिति तब हुई थी जब प्रथम आवृत्ति में भेजे हुये प्रतिवेदनों को भारत सरकार द्वारा एक झटके में अस्वीकार कर दिया गया था। इस घटना के घटते ही प्रकृति ने मानों संकेत दे दिया था कि आने वाले समय में कोई बहुत अच्छी उपलब्धि नहीं होने वाली है, प्रकृति इस बात का बार–बार संदेश दे रही थी कि इलेक्ट्रो होम्योपैथिक के साथियों अब भी संभल जाओ अलग–अलग राग अलापने की जगह एकता का सुर गाओ और जो नियम के अन्दर होना चाहिये वही करो पर हमारे साथी इतने मदान्ध थे कि उन्हें अपनी मस्ती के आगे कुछ समझ में ही नहीं आ रहा था, जिसकी जो मर्जी हुई वह बकने लगा, इसे हम संयोग ही कहेंगे कि समान प्रकृति के लोग एक स्थान पर आकर जमा हो गये थे, झूठ और बड़बोलेपन का नज़ारा यदि देखना हो तो कुछ दिन हमारे इलेक्ट्रो होम्योपैथी के साथियों के साथ बिता लीजिये, यहां पर एक से एक प्रतिभावान व्यक्तित्व के दर्शन स्वतः हो जायेंगे, कोई वैज्ञानिक है, तो कोई विधिवेत्ता मज़ेदार बात तो यह है कि विभिन्न प्रतिमाओं के धनी सब एक ही छत के नीचे एकत्रित हो गये हैं। भारत सरकार ने जून 2017 में एक बार हमारे साथियों को सूचित किया था कि प्रथकतावादी विचार धारा को छोड़कर एक धारा में जुड़कर सूचनायें प्रेषित करें पर हम तो हम ठहरे यदि हम किसी की बात मान लें तो फिर हमारी योग्यता कहां रह जायेगी, हम बार–बार यह कहते रहे कि भारत सरकार ने जिन प्रतिबंधों के साथ इलेक्ट्रो होम्योपैथी को संचालित होते रहने की अनुमति दी है उसकी अनदेखी नहीं होनी चाहिये, लोगों को बी0ई0एम0एस0 शब्द से इतना मोह था कि वह इस मोह जाल से अलग नहीं हो सके और अन्ततः इसी बी0ई0एम0एस0 शब्द ने बेड़ा गर्क कर दिया, अब भी समय है कि बीती ताहि बिसार दे! आगे की सुधि ले!! की भावना से ओत–प्रोत होकर भविष्य की योजना बनायें, जबतक मन मे यह भाव रहेगा कि हम बड़े हैं वह छोटा है, हम बुद्धिमान हैं वह मूर्ख, तब–तक किसी का भी कल्याण नहीं होगा। जब सरकार ने बैचलर और मास्टर शब्द पर प्रतिबन्ध लगा रखा है तब ऐसे शब्दों का प्रयोग करके हम सरकार को आखिर बताना क्या चाहते हैं यह तो हमारे साथी भाग्यशाली हैं जिनके विरुद्ध कार्यवाही करने का भारत सरकार ने कोई आदेश नहीं दिया, कोई माने या ना माने पर यह कटु सत्य है कि भारत सरकार के अधिकारियों का विचार अभी भी इलेक्ट्रो होम्योपैथी के लिये सकारात्मक है अन्यथः 09 जनवरी, 2018 को इन्टरडिपार्टमेन्टल कमेटी के सामने कुछ लोगों को छोड़कर हमारे साथियों ने जिस तरह का प्रस्तुतिकरण किया था उसके बारे में कोई शब्द नहीं मिल पा रहे हैं, देश के लाखों इलेक्ट्रो होम्योपैथों को इन्टर–डिपार्टमेन्टल कमेटी के चेयरपरसन डा0 कटोच को इतना धन्यवाद ज्ञापित करना चाहिये जिन्होंने आपको काम करने का अवसर बनाये रखा है साथ ही बधाई के पात्र हैं इन्टरडिपार्टमेन्टल कमेटी का कार्य देख रहे श्री ओम प्रकाश जी, जिन्होंने हर परिस्थितियों में इलेक्ट्रो होम्योपैथी का साथ दिया, श्री ओम प्रकाश जी का बार–बार यह कहना कि भारत सरकार का स्टैण्ड अभी भी 21 जून, 2011 को निर्गत आदेश है, उनका यह कथन समूची इलेक्ट्रो होम्योपैथी को न केवल ऊर्जा देता है अपितु गति भी प्रदान कर रहा है। आज देश में इलेक्ट्रो होम्योपैथी यदि ज़िन्दा है तो उसके पीछे इलेक्ट्रो होम्योपैथिक मेडिकल एसोसिएशन ऑफ इण्डिया के लिये भारत सरकार द्वारा 21 जून, 2011 को पारित आदेश ही है। कुछ हुआ हो या न हुआ हो परन्तु प्रतीक्षा की अवधि और बढ़ गई है, हमारे लाखों इलेक्ट्रो होम्योपैथ जो पिछले डेढ़ वर्ष से इस बात की प्रतीक्षा में थे कि शायद अब अच्छा समय आ जायेगा उनके अपने साथियों की कारगुज़ारी के कारण ही प्रतीक्षा की घड़ियां और बढ़ गई हैं, यदि समय रहते हमारे साथियों ने राजस्थान के सन्दर्भ में यथार्थ जानकारी नहीं दी तो उसका हश्र क्या होगा यह तो आने वाला समय ही बतायेगा।

चले बहुत! मगर कदम वहीं के वहीं!!
अति उत्साह ने ज़मीन दिखाई
बी0ई0एम0एस0 रहा घातक
मंज़िल अभी नहीं मिली
आशा बनी फिर प्रतीक्षा

एक मंज़िल, एक रास्ता – फिर दूरी क्यों ?

जब मंज़िल एक हो, पाने का संकल्प भी एक हो तो रास्ते अलग–अलग नहीं हो सकते अलग–अलग रास्तों पर चलते हुये मंज़िलें थोड़ी देर में मिलती हैं इलेक्ट्रो होम्योपैथी से हम जितने भी लोग जुड़े हैं उन सबका उद्देश्य एक है और लक्ष्य भी एक है, लक्ष्य की प्राप्ति के लिये हम सबको एक रास्ते पर चलना चाहिये। इलेक्ट्रो होम्योपैथिक के नियमितिकरण से सम्बन्धित प्रकरण का पटाक्षेप जिस ढंग से हुआ ऐसी उम्मीद हमें छोड़कर किसी को भी नहीं थी क्योंकि हमारा मानना था, मानना है और आगे भी रहेगा कि जो बोओगे ! वही तो काटोगे! जब हमने प्रतिवेदन नहीं दिया तो पूरे देश के इलेक्ट्रो होम्योपैथिक संगठनों ने जिस तरह की प्रतिक्रिया की उसका विवरण इस समय देना उचित नहीं है परन्तु जो तुमने किया और जो परिणाम पाया अब उसे बताया क्यों नहीं जा रहा है ?हम तो कल भी 21 जून, 2011 के आदेश के सहारे खड़े थे और ईश्वर ने चाहा तो यही आदेश आगे तारणहार बनेगा।

जो गुज़र गया उसपर मिथ्याविलाप करने से कोई लाभ नहीं है, परिस्थितियां बनती और बिगड़ती रहती हैं परन्तु मनुष्य का यह कर्त्तव्य है कि परिस्थितियों से वशीभूत हो! चुप होकर नहीं बैठें ! अपितु परिस्थितियों के साथ ताल–मेल बैठालते हुये नई व्यवस्थाओं को जन्म देना चाहिये, परिस्थितियां अभी भी इलेक्ट्रो होम्योपैथी के पक्ष में हैं ज़्यादा कुछ बिगड़ा नहीं है उन 29 लोगों को बार–बार विचार करना चाहिये कि आगे की उनकी रणनीति क्या होगी ?यदि यह लोग अपनी पुरानी मानसिकता पर अडिग रहे तो भविष्य उजज्वल नज़र नहीं आ रहा है।

हम बार–बार दोहराते हैं कि जैसे ही इलेक्ट्रो होम्योपैथी को मान्यता मिली हम सब सेवक की भांति सेवा करेंगे, जो सरकारी नियमों का पालन करेगा वही आनन्द उठायेगा जो नियमों के विरुद्ध जायेगा वह मैदान से बाहर हो जायेगा।

ज्ञान नहीं अभिमान ज़्यादा

ज्ञान का होना जितनी व्यक्तिगत उपलब्धि है उतनी ही परमेश्वर प्रदत्त क्षमता। ज्ञान व्यक्ति में विनम्रता को जन्म देता है और यही ज्ञान कभी कभी अज्ञानता वश व्यक्ति में अहंकार को जन्म दे देता है, ज्ञान जबतक सीमाओं में रहता है तब तक वह फलदायी होता है और जैसे ही ज्ञान सीमायें तोड़ने लगता है तो यही टूटी हुई सीमायें मर्यादा उल्लघन में तनिक भी देर नहीं लगाता है।

संसार में ज्ञान की सदैव से पूजा होती चली आयी है क्योंकि ज्ञान ही अज्ञानता के तिमिर को हटाता है यदि मनुष्य के मन में अज्ञानता बनी रहती है तो वह व्यक्ति न तो अपने लिए कुछ कर पाता है और न ही समाज को कुछ दे पाता है। ऐसा कहा जाता है कि मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है और समाज में रहने वाले हर प्राणी का यह दायित्व होता है कि समाज के नियमों और परिनियमों का पालन करते हुए समाज को एक मर्यादित रूप में संचालित होते रहने की कल्पना को साकार करे। ज्ञान जब अभिमान बन जाता है तो यह अभिमान ज्ञानी पुरूष के लिए अभिशाप भी बन जाता है और शनैः शनैः वह अज्ञानी व्यक्ति स्वतः ही रसातल को चला जाता है, इलेक्ट्रो होम्योपैथी में भी बहुत सारे ज्ञानी व्यक्ति हैं जो समय समय पर अपने ज्ञान का प्रर्दशन करते रहते हैं जब तक उनका ज्ञान समाज के लिए लाभकारी होता है तब तक तो समाज उसे स्वीकार करता है लेकिन जब दिया गया ज्ञान सीमाओं को तोड़ने लगता है तब न तो वह व्यक्ति स्वीकार होता है और न ही उसकी बतायी हुई बातें।

इलेक्ट्रो होम्योपैथी में बीते कुछ दिनों से ऐसी ऐसी बातें सामने आती हैं जिनपर भरोसा करना मुश्किल होता है इस पर जो हमारे ज्ञानी जन हैं वह कुछ इस प्रकार के तर्क देते हैं जिससे ऐसा प्रतीत होता है कि मानो ज्ञान का सारा भण्डार उन्ही के पास है, पिछले दिनों राजस्थान के सन्दर्भ जिस प्रकार की बातें सामने आयीं वह कभी तो पछतावे की तरफ और कभी छलावे की तरफ इंगित करती हैं। यह बहुत सुन्दर बात है और अच्छी बात है कि किसी राज्य में इलेक्ट्रो होम्योपैथी के लिए सरकारी विधेयक लाया गया परन्तु उसका जिस तरह से प्रस्तुतीकरण किया गया वह किसी भी स्तर से दूरगामी सोच वाला नहीं है, अभी मात्र विधेयक लाया गया है उसपर चर्चा होनी शेष है चर्चा के बाद जो परिणाम आयेंगे वही प्रयोग में लाये जायेंगे अगर यह सत्य इसी तरह कहा जाता तो सम्भवतः स्थिति कुछ और होती परन्तु किसी भी बात को इस कदर घुमा फिरा कर कहना की वह वास्तविकता से कोसों दूर हो जाये।

जनता को सोशल मीडिया के माध्यम से और समाचार पत्रों के माध्यम से जब यह बताया गया कि राजस्थान में इलेक्ट्रो होम्योपैथी मान्यता सम्बन्धी विधेयक ध्वनमति से पारित हो गया जब यह खबर आम जन तक पहुंची तो एक बार तो पूरे देश का इलेक्ट्रो होम्योपैथ हर्ष से उत्साहित हो गया परन्तु दूसरे ही क्षण जब कुछ जानकार लोगों के द्वारा इस विषय पर टिप्पणी की गयी तो इलेक्ट्रो होम्योपैथी के ज्ञानियों ने जिस प्रकार की बातें कहीं वह कहीं न कहीं से गर्वोक्ती से कम नहीं लगती हैं, इसपर जब हम थोड़ा भी चिन्तन करते हैं, जो जो बात सामने आती है वह यह है कि हमारे साथियों को अपने ज्ञान पर इतना अभिमान है कि वह सामने वाले को मूर्ख के अलावा कुछ नहीं मानते हैं, यह बात कभी भी नहीं भूलनी चाहिये कि मूर्ख कभी कभी ऐसी परिस्थिति पैदा कर देता है कि जिससे उबरने में ज्ञानियों को भी सारी ऊर्जा लगा देनी पड़ती है, किसी कवि ने बड़ी सुन्दर बात कही है कि.....

... हरियाणा एक ऐसा राज्य है जिस राज्य से सबसे ज्यादा उपदेशक और धर्म प्रचारक पैदा होते हैं।

हर व्यक्ति एक दूसरे को उपदेश और ज्ञान देता है इसी प्रसंग में एक ज्ञानी, एक सीधे सादे व्यक्ति को ज्ञान देने लगा, तब उस व्यक्ति ने बहुत ही मार्मिक और सटीक उत्तर दिया कि वर्षों पहले भगवान श्री कृष्ण कुरूक्षेत्र में ज्ञान दे गये थे अब हमें ज्ञान की क्या जरूरत। कहने का तात्पर्य यह है कि किसी की बातें तब तक सुनने और समझने में रोचक लगती है जब तक सुनने वाला व्यक्ति यह समझकर सुनता है कि जो कुछ भी हमें सुनाया जा रहा है वह सत्यता से परे नहीं है और वास्तविकता के करीब है परन्तु बात जब समझ में न आवे तब वह बात न तो सुनने में अच्छी लगती है और न ही समझने में। जो लोग राजस्थान के समाचार का लाभ नहीं उठा पा रहे हैं। उन्होंने नई बात कहनी शुरू कर दी है कि केन्द सरकार ने अप्रैल के पहले सप्ताह में एक बार फिर चर्चा के लिए बुलाया है जबकि सत्यता का इससे कोई लेना देना नहीं है।

भारत सरकार ने 12 फरवरी, 2018 को पत्र लिखकर इलेक्ट्रो होम्योपैथिक मेडिकल एसोसिएशन ऑफ इण्डिया को यह सूचित कर रखा है कि भारत सरकार द्वारा गठित इन्टरडिपार्टमेन्टल कमेटी द्वारा 9 जनवरी, 2018 को आहुत बैठक के बारे में निर्णय लिया जा चुका है अन्तिम निर्णय आना शेष है ऐसे में इस तरह की बातें उठाना कहां तक उपयोगी और तर्कसंगत है ! यह तो वही बता सकते हैं जो इस तरह की बातों में रहते हैं, सत्यता तो एक दिन सामने आती ही है, इस प्रकार की उठायी जाने वाली बातें न तो ज्ञान की श्रेणी में आती हैं और न ही इलेक्ट्रो होम्योपैथी के हित के लिए होती हैं।

आने वाले समय में अब जो कुछ भी होगा, निश्चित रूप से इलेक्ट्रो होम्योपैथी के लिए एक दिशा तो तय कर ही देगा।

मन्दिर में रहना है तो .....

उत्तर भारत की एक लोकोक्ति बहुत प्रचलित है कि मन्दिर में रहना है तो राधे– राधे कहना है। इस लोकोक्ति का शाब्दिक का अर्थ यह है कि जो व्यक्ति जहां पर रहे उसी के अनुरूप रहे, इलेक्ट्रो होम्योपैथी में इस लोकोक्ति का बहुतायत से उपयोग हो रहा है, पूरे देश में इलेक्ट्रो होम्योपैथी के जितने भी संगठन काम कर रहे हैं उनका यह पूरा प्रयास रहता है कि उनसे जुड़े व्यक्ति उनकी ही जैसी कहते रहें अगर किसी ने धोखे से सच कहने का साहस किया तो उस व्यक्ति को तरह तरह से प्रताड़ित व अपमानित करने का कार्य किया जाता है जो कि किसी भी कोंण से आन्दोलन के लिए उचित नहीं होता। प्रत्येक आन्दोलन में अलग अलग सोच के व्यक्ति होते हैं और आन्दोलन तभी फलीभूति होता है जब हर विचार का सम्मान हो और यदि कोई विचार आन्दोलन के लिए हितकारी न हो तो उसपर बैठकर परस्पर विचार विमर्श करना चाहिये तदुपरान्त कोई निर्णय लेना चाहिये।

पिछले दिनों इलेक्ट्रो होम्योपैथी के आन्दोलनों का जो परिणाम आ रहा है उसके पीछे अगर कोई कारण है तो वह है संगठनों की स्वेच्छाचारिता। इलेक्ट्रो होम्योपैथी के जितने भी संगठन संचालित हो रहे हैं उन सब के संचालकगण आपने आपको स्वयं श्रेष्ठ मानते हैं और यह सामान्य सी बात है जब एक श्रेष्ठ होगा तो दूसरा नेष्ट होगा, श्रेष्ठ और नेष्ठ में कभी भी मिलाप नहीं हो सकता क्योंकि जो अपने आप को श्रेष्ठ समझ बैठा है वह नेष्ठ को अवसर कैसे देगा और जो पहले से ही नेष्ठ है वह श्रेष्ठ को कदाचित स्वीकारेगा ही नहीं, कहने को तो इलेक्ट्रो होम्योपैथी के आन्दोलन को चलते हुए लगभग 150 वर्ष हो गये हैं परन्तु इन 150 वर्षों में सामूहिक आन्दोलनों से इलेक्ट्रो होम्योपैथी को कोई लाभ नहीं मिल सका।

1953 के जिस पत्र की बात पूरा इलेक्ट्रो होम्योपैथी समाज करता है वह किसी व्यक्ति विशेष के प्रयासों से हासिल हुआ था 25 नवम्बर, 2003 का आदेश 18 नवम्बर, 1998 को दिल्ली उच्च न्यायालय द्वारा पारित आदेश का परिणाम था। 21 जून 2011 को भारत सरकार द्वारा जो आदेश जारी किया गया वह आदेश भी संस्था विशेष इलेक्ट्रो होम्योपैथिक मेडिकल एसोसिएशन ऑफ इण्डिया के प्रयासों का एकल परिणाम था, जो व्यक्ति प्रयासो को स्वीकार नहीं करता वह स्वयं भी कभी सफल नहीं हो पाता इसकी ताज़ी बानगी यह है कि वर्ष 2016 में इलेक्ट्रो होम्योपैथी के नियमन के लिए भारत सरकार के स्वास्थ्य मन्त्रालय द्वारा एक उच्च स्तरीय कमेटी का गठन किया गया, जिस कमेटी ने वर्ष पर्यन्त कार्य किया और कमेटी के निर्देशानुसार पूरे देश में अपने अपने स्तर से विभिन्न संगठनों द्वारा निर्देशों का पालन किया गया और प्रतिवेदन भी प्रेषित किये गये, वर्ष पर्यन्त प्रतीक्षा के बाद 9 जनवरी, 2018 को उच्च स्तरीय कमेटी ने 29 लोगों को इस योग्य पाया कि वह अपने विचार कमेटी सदस्यों के सामने रख सकें, जो लोग कमेटी के सामने गये और अपने अपने स्तर अपने विचारों को कमेटी के सदस्यों के सामने रखे, कुछ दिनों के बाद कमेटी ने हर बिन्दु पर सूक्ष्मता से विचार किया और 19 मार्च, 2018 को कमेटी ने अपनी राय भारत सरकार को भेज दी। कमेटी द्वारा जो संस्तुति सरकार को की गयी वह कोई सुखद परिणाम नहीं दे रही है यदि आप गम्भीरता से विचार करें कि यह परिणाम क्यों आया ?

एक साल तक इलेक्ट्रो होम्योपैथी के संगठन यह चिल्लाते रहे कि मेरा प्रतिवेदन स्वीकार हो गया है, मुझे ही मान्यता मिलेगी पर क्या मिला ! जो कुछ भी मिला क्या वह समाज के सामने चिल्ला चिल्ला कर बताया जा सकता है तो इसका उत्तर न में ही होगा। यदि यही प्रयास सामूहिक स्तर पर एक साथ किया गया होता तो शायद परिणाम कुछ और ही होता। अभी भी कुछ नहीं बिगड़ा है समय रहते यदि विचारों में एकरूपता लायी जाये और यह लड़ाई ठीक से लड़ी जाये तो इसमें कोई दो राय नहीं है कि इलेक्ट्रो होम्योपैथी को सफलता न मिले राजस्थान के सन्दर्भ में जो कुछ भी प्रचारित किया जा रहा है यदि वह पूर्ण सत्य है तो निश्चित रूप से एकल प्रयास का ही परिणाम होगा। एकल प्रयास का तात्पर्य यह नहीं है कि सामूहिक प्रयास नहीं होने चाहिये एकल प्रयास से आशय यह है कि पूरे देश के संगठन एक उद्देश्य के साथ एक विचार धारा से सहमत होते हुए कार्य करें, 19 मार्च को जारी पत्र में सरकार ने एक बार फिर यही कहा है कि सारे लोग एक साथ मिलकर यह प्रयास करें कि एक प्रतिवेदन आये और सरकार को एक पत्र के माध्यम से ही पूर्ण स्थिति से अवगत कराया जाये। हम यह कल्पना तो कर ही सकते हैं कि बार बार गिर कर कुछ तो सबक ले ही लेंगे, यदि अब भी हमारे विचारों में परिवर्तन नहीं आया तो इस बात को निश्चित समझिये कि सरकार आपको कुछ आसानी से देगी। वर्ष 2017 की कमेटी ने 19 मार्च 2018 को जारी पत्र में जो कुछ भी कहा है वह यह स्पष्ट रूप से दर्शा रहा है कि भारत सरकार का रूख इलेक्ट्रो होम्योपैथी के लिए अभी भी सकारात्मक है सरकार इलेक्ट्रो होम्योपैथी को बहुत कुछ देना चाहती है पर जो वांछित जानकारियां हैं उन्हें हम अलग अलग रूपों में प्रस्तुत करेंगे तो सरकार क्या करेगी ?भारत सरकार ने बार बार यह स्वीकारा है कि जब तक इलेक्ट्रो होम्योपैथी को भारत सरकार द्वारा मान्यता नहीं प्रदान की जाती है तब तक इलेक्ट्रो होम्योपैथी के संचालन में किसी तरह की कोई बाधा नहीं है भारत सरकार ने बार बार स्वीकारा है कि इलेक्ट्रो होम्योपैथी की मान्यता के सम्बन्ध में भारत सरकार का स्टैण्ड 21 जून, 2011 पर अभी भी है, आप सबको ज्ञात ही होगा कि भारत सरकार द्वारा निर्गत 21 जून, 2011 का आदेश पूरे देश में इलेक्ट्रो होम्योपैथी को मजबूती प्रदान कर रहा है और इलेक्ट्रो होम्योपैथी को लगातार आगे बढ़ा भी रहा है।

जो कुछ घटनायें घट रही हैं वह हमें कुछ नई सम्भावनाओं की तरफ निरन्तर इंगित कर रही हैं, सम्भावनायें कभी समाप्त नहीं होती हैं एक सम्भावना खत्म होती है तो नई सम्भावना जन्म ले लेती है परन्तु यह सम्भावनायें तभी तक जीवित हैं जब तक हमारी मानसिक स्थिति सकारात्मक रहेगी सकारात्मक विचारधारा से किया हुआ कार्य सदैव फलदायी होता है जिस फल के पाने की हमारे साथी वर्षों से प्रतीक्षा कर रहे हैं वह फल अब उन्हें मिल ही जाना चाहिये प्रतीक्षायें जब बहुत लम्बी हो जाती हैं तो आशायें टूटने लगती हैं और निराश व्यक्ति कभी भी बहुत अच्छे परिणाम नहीं देते। तमाम बिन्दुओं एवं विभिन्न पहलुओं पर चिन्तन करने के बाद यह स्पष्ट हो गया है कि इलेक्ट्रो होम्योपैथी का भविष्य अब तभी उज्जवल होगा, जब हमारे नेतागण अपने विचारों में एक रूपता लायेंगे, हठधर्मिता से काम चलने वाला नहीं है। आप ही सबकुछ सत्य कह रहे हैं बाकी सबलोग गलत, इस विचार धारा से हमारे साथियों को उबरना होगा क्योंकि अब वह समय नहीं रहा है कि आपकी हेकड़ी चले, यह लोकतन्त्र है, लोकतन्त्र में सबको अपनी बात रखने का हक है परन्तु स्वतन्त्रता की आड़ में किसी को अनुचित व्यवहार करने का अधिकार नहीं होता है इसलिए परिस्थितियों को ध्यान में रखते हुए वही कार्य करना चाहिये जो समय के अनुरूप हो और इलेक्ट्रो होम्योपैथी के हित में हो। परिस्थितियों को बदलते, समय नहीं लगता है परन्तु परिस्थितियों को विपरीत स्थिति में जाने से रोकने के लिए हम समय रहते प्रयास तो कर ही सकते हैं।

इलेक्ट्रो होम्योपैथी के नियमितिकरण के सम्बन्ध में 19 मार्च, 2018 को भारत सरकार द्वारा जारी आदेश

व

21 जून, 2011 के आदेश का

और मज़बूत होना

इलेक्ट्रो होम्योपैथी के बढ़ते कदमों को

जानने के लिये सम्मिलित हों

बोर्ड ऑफ़ इलेक्ट्रो होम्योपैथिक मेडिसिन, उ0प्र0

के 44 वें स्थापना दिवस के अवसर पर

दिनांकः— 21 अप्रैल, 2018

दिनः— शनिवार

समयः—अपरांह 2 बजे

स्थानः— ऐवान—ए— ग़ालिब ऑडिटोरियम

(सेमिनार हॉल)

बाल भवन के पीछे

निकटः—डेन्टल काउंसिल ऑफ़ इण्डिया

माता सुन्दरी रोड,

नई दिल्ली में

आप सभी

इष्ट मित्रों सहित

आमंत्रित हैं

एम0एच0इदरीसी
चेयरमैन

प्रमोद शंकर बाजपेई
राष्ट्रीय प्रवक्ता

आन्दोलन तो निडरता से चलते हैं

इलेक्ट्रो होम्योपैथी को एक आन्दोलन के रुप में माना जाता है और यह आन्दोलन पिछले डेढ़ सौ वर्षों से भारतवर्ष में चल रहा है, प्रारम्भ से लेकर आजतक इस आन्दोलन से बहुत से लोग जुड़े जिन्होंने संगठन बनाया और संगठन के माध्यम से आन्दोलन को गति प्रदान की सन् 1950 के आस–पास पूरे भारत में कुछ ही संगठन कार्य कर रहे थे जो पूरे देश में इलेक्ट्रो होम्योपैथी के लिये कार्य किया करते थे, उन दिनों उत्तर प्रदेश, बंगाल और बिहार इलेक्ट्रो होम्योपैथी के गढ़ हुआ करते थे और इन्हीं प्रान्तों से निकले हुये इलेक्ट्रो होम्योपैथ पूरे देश में इलेक्ट्रो होम्योपैथिक के आन्दोलन की अलख जलाते थे, चिकित्सा के माध्यम से , साहित्य के माध्यम से जनमानस तक इलेक्ट्रो होम्योपैथी को पहुंचाने का प्रयास होता था, देश नया–नया आज़ाद हुआ था ज़्यादा कानूनी दांव–पेंच नहीं थे और लोग भी सीधे–सादे हुआ करते थे, ज़्यादा छल–कपट के दर्शन नहीं हुआ करते थे, ज़्यादा कानूनी बाध्यता न होने के कारण लोगों में भय भी नहीं था और लोग निडर होकर कार्य किया करते थे, धीरे–धीरे परिस्थितियां बदलीं कुछ नये और युवा लोग इस आन्दोलन से जुड़े उनके मन में यह विचार आया कि जब अन्य चिकित्सा पद्धतियां नियमित ढंग से चलाई जा रही हैं तो क्यों न इलेक्ट्रो होम्योपैथिक चिकित्सा पद्धति को भी उसी ढंग से चलाया जाये ! प्रारम्भिक काल में इलेक्ट्रो होम्योपैथी में शिक्षण–प्रशिक्षण की कोई नियमित व्यवस्था नहीं थी अस्तु गुरु शिष्य परम्परा के आधार पर शिक्षण कार्यक्रम संचालित होते थे। परिवर्तन हुआ और शिक्षण व्यवस्था नियमित विद्यालय की व्यवस्था में बदल गयी इस विद्यालीय व्यवस्था में इलेक्ट्रो होम्योपैथी के आन्दोलन की दिशा ही बदल दी लोग विद्यालय में मिलते थे परस्पर चर्चा होती थी इलेक्ट्रो होम्योपैथी की शिक्षा ग्रहण करने वालों के मन में भी यह विचार कौंदता था कि इस चिकित्सा पद्धति को भी सरकारी मान्यता प्राप्त हो और इसी सरकारी मान्यता की चाहत ने इलेक्ट्रो होम्योपैथी आन्दोलन को गति दी धरनो प्रर्दशनों के माध्यम से सरकार को जागृत करने का प्रयास प्रारम्भ हुआ, धीरे धीरे आन्दोलन पूरे देश में फैल गया तब सरकार का ध्यान गया, कुछ राज्य सरकारों ने इस आन्दोलन को दबाने के लिए कुछ उलटे सीधे शासनादेश भी किये जिनका डटकर मुकाबला किया गया बहुत मुकदमें लगे कुछ मुकदमों के परिणाम अच्छे आये और 1998 के एक मुकदमें ने इलेक्ट्रो होम्योपैथी को स्थापित करने की दिशा में मील का पत्थर जैसा काम किया, 1998 के बाद 2003 फिर 5–5–2010 एवं 21 जून, 2011 इसी आन्दोलन का परिणाम रहे हैं परन्तु वर्ष 2015 से जो आन्दोलन प्रारम्भ हुआ उसने गति तो खूब पायी, आन्दोलन कारियों ने वाहवाही भी खूब लूटी परन्तु परिणाम के नाम पर पल्ड़ा भारी नहीं हो पाया, इसके पीछे एक कारण यह भी था कि जो लोग आन्दोलन चला रहे थे उनमें निडरता नहीं थी, पहला काम तो उन्होंने यह किया कि अपने आपको सुरक्षित करने के लिए दूसरी मान्यता प्राप्त पद्धतियों के शरण में चले गये और वहीं से आन्दोलन का संचालन प्रारम्भ हो गया। आन्दोलन अभी भी चल रहा है परन्तु अब वही लोग टिकेंगे जो निडर होकर कार्य करेंगे, इलेक्ट्रो होम्योपैथी के आन्दोलन को कई बार ऐसी परिस्थितियों से होकर गुजरना पड़ा है,यदि 2003 को याद करें तो सबकुछ सामने आ जायेगा तेजी से चलते आन्दोलन को इस प्रकार झटका लगता है कि भारत सरकार द्वारा जारी 25 नवम्बर 2003 का आदेश।

जब तक यह आदेश जारी नहीं हुआ था तब तक पूरे देश में इलेक्ट्रो होम्योपैथी की जय जय हो रही थी,खूब विद्यालय खुल रहे थे, छात्र भी खूब प्रवेश ले रहे थे और तो और शीर्ष संस्थाओं की संख्या भी दिन दूनी रात चौगुनी बाढ़ के पानी जैसी बढ़ रही थी, जो कल तक किसी विद्यालय में किसी सहायक के रूप में थे आज वह किसी इलेक्ट्रो होम्योपैथी संस्था के मालिक थे और इसी अराजकता का परिणाम था जो इलेक्ट्रो होम्योपैथी के आन्दोलन को झटका लगा।

जब भी कभी इलेक्ट्रो होम्योपैथी का इतिहास लिखा जायेगा तो ऐसे लोगों को सम्मिलित किया जायेगा या नहीं यह तो इतिहासकार पर निर्भर करेगा जब इतिहास की बात आती है तब मन यह सोचने के लिए विवश हो जाता है कि वास्तव में जो समर्पित लोग हैं या ऐसे चिकित्सक हैं जो इलेक्ट्रो होम्योपैथी की सच्ची सेवा कर रहे हैं, क्या कोई इतिहासकार उन्हें स्थान देगा ! वर्तमान में इलेक्ट्रो होम्योपैथी का आन्दोलन जो लोग चला रहे हैं उन्हें इलेक्ट्रो होम्योपैथी से ज्यादा व्यक्तिगत चिन्ता है, कभी कभी तो ऐसा लगने लगता है कि यह आन्दोलन इलेक्ट्रो होम्योपैथी के लिए चलाया जा रहा है या निजी हितों की रक्षा के लिए ! या फिर इतिहास पुरूष बनने के लिए, सोशल मीडिया में किसी ने एक पोस्ट किया था कि कितरती व्यक्ति इतिहास बनाता और बुद्धिमान उस इतिहास को पढ़ता है एक बार तो लगता है कि यह बात सही है परन्तु दूसरे पल ही मन यह मानने को तैयार नहीं होता है क्योंकि इतिहास वही व्यक्ति बना सकता है जो ताकतवर होता है और आन्दोलन भी वही चलाता है जिसके पास धन–बल व जन–बल होता है। चाणक्य कितना भी बुद्धिमान क्यों न रहा हो परन्तु उनकी याद मात्र नीतियों के लिए की जाती है और जब शक्ति की बात होती है तो चन्द्रगुप्त ही आगे आते हैं आज के युग में ऐसे लोग सिर्फ कल्पना में होते हैं लेकिन एक दम समाप्त हो जावे ऐसा भी नहीं होता है। इलेक्ट्रो होम्योपैथी में किसी भी तरह के व्यक्ति क्यों न आ जायें परन्तु एक निडर व्यक्ति भी रहा तो आन्दोलन समाप्त नहीं होता है 19 मार्च, 2018 को भारत सरकार द्वारा जिस प्रकार से इलेक्ट्रो होम्योपैथी की मान्यता सम्बन्धी प्रकरण का पटाक्षेप किया गया है, उससे लोगों में हताशा है जो इस आन्दोलन से जुड़े हुए लोग थे वह एक दूसरे से मिलने में कतरा रहे हैं और तो और दुनिया भर की बातें की जा रही हैं परन्तु देश का कोई भी संगठन 19 मार्च पर खुलकर चर्चा करने के लिए तैयार नहीं है,इसके पीछे कारण क्या है यह न तो कोई रहस्य है और न ही कोई छिपा हुआ एजेण्डा, अपितु इसके पीछे वह स्थिति है जो डेढ़ वर्षों से लोगों की भावनाओं से खेला गया है, ऐसे ऐसे दावे लोगों द्वारा फेंके गये हैं जिसका परिणाम यह है कि आज एक दूसरे से बात नहीं कर पा रहे हैं कोई माने या न माने पर निश्चित रूप से यह इलेक्ट्रो होम्योपैथी के आन्दोलन को थोड़ा सा धक्का अवश्य देगा। यद्यपि 19 मार्च, 2018 का प्रभाव इलेक्ट्रो होम्योपैथी के संचालन पर बिल्कुल नहीं पड़ेगा क्योंकि 21 जून, 2011 का आदेश आज भी मील के पत्थर की भांति खड़ा है परन्तु मान्यता का जो लालीपॉप दिखाया गया उसने हमारे साथियों के मन में हताशा का भाव भर दिया है। इस आन्दोलन में पिछले पांच छः वर्षों से जिन नये लोगों ने ज्यादा सक्रीयता दिखायी उनके मन में पहले से ही यह भाव था कि इलेक्ट्रो होम्योपैथी को हाल फिलहाल मान्यता नहीं मिलने वाली है, तभी तो एक तरफ यह लोग मान्यता की बड़ी बड़ी बातें करते रहे दूसरी तरफ अपने भविष्य को इलेक्ट्रो होम्योपैथी में सुरक्षित नहीं मान रहे थे इसलिए आते ही पहले इन लोगों ने अपने आप को किसी अन्य पद्धति के हवाले किया फिर इलेक्ट्रो होम्योपैथी की तरफ ध्यान दिया। पूरे समाज को इलेक्ट्रो होम्योपैथी में भविष्य तलाशने की सलाह देने वाले खुद अपना भविष्य दूसरी पैथी में तलाश रहे थे, जो भी होना था वह हो गया कुछ व्यक्तियों के रहने या न रहने से न तो आन्दोलन बदलता है और न ही आन्दोलन की शक्ल, आज भी बहुत सारे ऐसे समर्पित इलेक्ट्रो होम्योपैथ हैं जो इस आन्दोलन को नये सिरे से और तेज़ धार देंगे तथा निश्चित रूप से आने वाले कुछ ही दिनों में इलेक्ट्रो होम्योपैथी के लिए कुछ न कुछ दिशा अवश्य निर्धारित करा पाने में सक्षम होंगे परन्तु यह तभी सम्भव है जब हमारे सभी साथी पूरी क्षमता के साथ निडर होकर काम करें और दूसरों को भी प्रेरित करें। समय कभी एक सा नहीं रहता है जो कल था वह आज नहीं है, जो आज है वह भी कल पुराना होगा परन्तु इलेक्ट्रो होम्योपैथी का चलने वाला यह आन्दोलन निरन्तर अबाध गति से चलता ही रहेगा।

निःशुल्क चिकित्सा शिविर अप्रैल के पहले सप्ताह से

इलेक्ट्रो होम्योपैथी के आन्दोलन को गति देने के लिए और इलेक्ट्रो होम्योपैथों के मन में उत्साह भरने के लिए इलेक्ट्रो होम्योपैथिक मेडिकल एसोसिएशन ऑफ इण्डिया ने यह निर्णित किया कि पूरे प्रदेश में बोर्ड ऑफ इलेक्ट्रो होम्योपैथिक मेडिसिन, उ0प्र0 निःशुल्क चिकित्सा शिविर का आयोजन करे, संगठन के इस निर्देश को बोर्ड ऑफ इलेक्ट्रो होम्योपैथिक मेडिसिन उ0प्र0 ने सहर्ष स्वीकारा और अविलम्ब यह निर्णय लिया कि अप्रैल से लेकर जून तक प्रदेश के विभिन्न अंचलों में इलेक्ट्रो होम्योपैथी के निःशुल्क चिकित्सा शिविर आयोजित किये जायेंगे।

आपको याद होगा कि पिछले अंक में गजट के माध्यम से हमने इस आशय की जानकारी सबको दी तथा लोगों से अपील की कि जो इच्छुक व्यक्ति अपने जनपद में निःशुल्क चिकित्सा शिविर का आयोजन कराना चाहता हो वह बोर्ड के कार्यालय से सम्पर्क कर सकता है, इसका परिणाम यह हुआ कि बहुत सारे लोगों ने इस विषय पर सम्पर्क किया, जो व्यक्ति अपने यहां कैम्प लगवाना चाहता है वह भी इस आशय की सूचना बोर्ड कार्यालय को दे सकता है, अभी प्रथम स्तर पर फिरोजाबाद ,मैनपुरी,अमौली, फतेहपुर व घाटमपुर कानपुर व झांसी में इस तरह के निःशुल्क चिकित्सा शिविर के लिए हरी झण्डी दी जा चुकी है। इस चिकित्सा शिविर के लिए दवाओं व चिकित्सकों की व्यवस्था बोर्ड अपने स्तर से करेगा शेष व्यवस्था स्थानीय आयोजक को ही करनी होगी। इस तरह के आयोजन के पीछे यह उद्देश्य है कि अभी 19 मार्च 2018 को भारत सरकार ने इलेक्ट्रो होम्योपैथी के नियमितीकरण के सम्बन्ध में जो पत्र जारी किया है उसने देश में एक नई स्थिति पैदा कर दी है जिससे अधिकांश लोगों में हताशा का भाव जन्म ले चुका है लोगों के मन में यह भाव पैदा हो गयी है कि अब कार्य करने का अधिकार ही नहीं रहा,जबकि वास्तविकता यह है कि इलेक्ट्रो होम्योपैथिक मेडिकल एसोसिएशन ऑफ इण्डिया के पास अभी भी 21 जून, 2011 जैसा ब्रह्मास्त्र है आपको ज्ञात होना चाहिये कि भारत सरकार इस बात की घोषणा कर चुकी है जब तक इलेक्ट्रो होम्योपैथी को मान्यता नहीं मिलती तब तक भारत सरकार द्वारा जारी 21 जून, 2011 का आदेश प्रभावी रहेगा।

इस तरह से यह आदेश न केवल अपने लोगों की अपितु पूरे देश के इलेक्ट्रो होम्योपैथों को सुरक्षा देने में सक्षम है इसे विडम्बना ही कहेंगे जब जब इलेक्ट्रो होम्योपैथी में संकट के बादल मंडराते हैं तब तब इलेक्ट्रो होम्योपैथिक मेडिकल एसोसिएशन ऑफ इण्डिया ढाल बनकर सामने आती है और पूरे देश के इलेक्ट्रो होम्योपैथों को समदृष्टता के भाव से सबको संरक्षण प्रदान करती है।